Ancient History B.A. Honours

Career and achievement of high Airlangya. ऐरलंग

ऐरलंग की उपलब्धियों पर प्रकाश डालें?

ऐरलंग की प्रशस्ति के अनुसार — महेन्द्रदत्ता अथवा गुणप्रिय धर्मपत्नी और उदयन की संतान ऐरलंग था। जिसका विवाह पूर्वी जावा के शासक धर्मवंश के कन्या से हुआ था। धर्मवंश कदाचित मुकुटवंशवर्धन का उत्तराधिकारी था। क्रोम के मतानुसार उसने मुकुटवंशवर्धन ज्येष्ठ कन्या के साथ विवाह किया था और इसी अधिकार से मुकुटवंशवर्धन के बाद सिंहासन पर बैठा। ऐरलंग ने इसकी कन्या से विवाह कर जावा तथा बालि के राजवंशों का एकीकरण किया, इसलिए उसे ब्राह्मणों द्वारा जावा पर राज्य करने का आमंत्रण मिला।

विवाह के बाद ऐरलंग अपने श्वसुर के साथ पूर्वी जावा में रहता था और जब 1006 में जब देश आक्रमण हुआ तो उसे भी भागना पड़ा। प्रशस्ति के अनुसार शक संवत 932 माघ मास की त्रयोदशी चंद्रवार के दिन मुख्य ब्राह्मण और प्रजा प्रतिनिधि ऐरलंग के पास आये और उससे राज्य करने का अनुरोध किया। उस समय जावा की राजनीतिक परिस्थिति ठीक न थी और बहुत से स्थानीय शासक स्वतंत्र बने हुए थे जिन्हें ऐरलंग ने उनको दबाया। कवि की वाणी में सिंहासन बैठने पर उसके चरण सामंतों के शीश पर रखे गये थे। इससे प्रतीत होता है कि पूर्वी जावा के शासन की बागडोर लेने और सम्राट बनकर अभिषेक करने में कुछ समय लगा होगा और इसकाल में उसने विपक्षी शक्तियों को दबाया। उसका अभिषेक 1019 में हुआ और तब उसने रके लडु श्री लोकेश्वर धर्मवंश ऐरलंग अनन्त विक्रमोत्तुंगदेव नाम और उपाधि धारण की। उस समय उसका राज्य उत्तरी किनारे के सुरावाया और पसुरुहन के बीच में था। दस वर्ष तक उसे अपनी दिग्विजय ~~के लिए~~ लिए प्रतीक्षा करनी पड़ी और उसी समय 1025 ई० में श्री विजय पर चोलों का आक्रमण हुआ जिससे उसे अपना राज्य विस्तृत करने का अवकाश मिला।

1028 ई० तक ऐरलंग अपना राज्य विस्तार करने के लिए पूर्णतया शक्तिशाली हो गया। कुछ शासकों ने उसके अधीन रहना स्वीकार कर लिया। 1029 ई० में

Scanned with CamScanner

में उसने भीमप्रासाद को युद्ध में हराया। 1030 ई० वैंकरे के कुमार विजय की शक्ति को थोड़ा समय के लिए नष्ट किया। 1031 ई० में अधमापुत्र के ऊपर पूर्णतया विजय प्राप्त कर उसकी राजधानी तथा अन्य नगरों को जला दिया। 1032 ई० में दक्षिण के एक शक्तिशाली साम्राज्ञी को हराया जो राक्षसी स्वरूप था। उसी वर्ष उसका पुरवरी के शासक के साथ संघर्ष हुआ जो जावा के विध्वंस का प्रधान कारण बन गया।

पुरवरी का शासक पूर्णतया पराजित हुआ। यह स्थान जावा में ही रहा होगा। वैंकरे के शासक की ओर से ऐरलंग को अब भी भय था कि क्योंकि वह बड़ा शक्तिशाली था और उसकी शक्ति नष्ट नहीं हो सकी थी। वह 1035 ई० में उसने वैंकरे के विरुद्ध एक बड़ी सेना लेकर आक्रमण किया और उसे पूर्णतया हरा दिया। दो मास बाद ~~उसी के~~ विजय को उसी के सेना ने बंदी बना लिया और फिर उसका वध कर दिया। ऐरलंग के सम्मुख अब कोई विरोधी नहीं रहा और उसका मार्ग पूर्णतया साफ हो गया। वह जावा का सम्राट बन गया। अपने विस्तृत राज्य के सुव्यवस्थित रूप से शासन के लिए ऐरलंग ने अपनी राजधानी पूर्व में कहुरिपन में रखी, जिसकी पहचान अभी तक नहीं की जा सकी है।

जावा की आंतरिक राजनीति परिस्थिति सुगठित होने के कारण उसका विदेशों का साथ संपर्क स्थापित करना स्वाभाविक था। कृनेंग के एक लेख में परद्वीप, परमंडल के उल्लेख से कुछ विद्वानों के विचार में ऐरलंग के विदेशों में जाकर संघर्ष करने का संकेत मिलता है, पर उसकी किसी स्रोत से पुष्टि नहीं होती है। उनके लेखों में उन विदेशियों का अवश्य उल्लेख है जो व्यापार अथवा किसी अन्य कार्य के लिए जावा आते थे जैसे — किलंग (भारतीय कलिंग निवासी), आर्य (भारतीय द्रविण), गौड़ (बंगाल के गौड़), सिंघल (लंका निवासी), कर्णाटक निवासी, चोलिक (कारोमण्डल के चोल), मलयन (मालाबार निवासी), पाण्डिकिर (पाण्डर और चोल), द्रविण (तमिल), चंपा के ~~क~~ चम, ~~रमेन मों~~ रेमेन मों अथवा रामनी के मल तथा किमर ख्मेर जो मेकांग नदी के मुहाने पर तुगन के निकट उत्तर में व्यापार के लिए आते थे।

ऐरलंगा एक कुशल और योग्य शासक था। उसके समय में सभी धर्मों ने उन्नति की। लेखों में शैव, सौगत, बौद्ध ऋषियों यतियों का उल्लेख है। शैव मत ने उस समय में हिन्द-चीन तथा हिन्देशिया में प्रधान स्थान प्राप्त किया था। ऐरलंगा को भी स्वयं विष्णु अवतार माना गया है। (गरुड़ पर आसीन विष्णु और उसके दोनों ओर लक्ष्मी की मूर्ति से सम्राट और उसकी दो रानियों का सांकेतिक किया गया है।) सात वर्ष तक सम्राट ने अपना समय धार्मिक कृत्यों में व्यतीत किया और सुचारु रूप से शासन किया। ऐरलंगा का शासन काल साहित्यिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है जावा में भारतीय ग्रंथों का अनुवाद हुआ और उसके आधार पर ग्रंथ लिखे गये महाभारत के आदि विराट और भीष्म पर्व का भी जावानी भाषा में अनुवाद हुआ। कण्व द्वारा 1035 ई० में "अर्जुन-विवाह" लिखा गया। जिसमें वास्तव में ऐरलंगा के सुमात्रा की राजकुमारी के साथ विवाह का उल्लेख है।

जावा के इतिहास में ऐरलंगा का ~~इतिहास~~ स्थान विशेष महत्व का है। उसने देश को वैदेशिक शक्ति से छुड़ाकर एकता प्रदान की और एक विस्तृत साम्राज्य स्थापित किया। कुशल शासक के रूप में उसने देश का शासन सुचारु रूप से किया तथा उसके विकास में योगदान दिया। (इसीलिए उसके यहां विदेशों से भी व्यापारी आते थे, जैसा कि उसके लेखों से प्रतीत होता है।) जीवन के अंतिम वर्ष में ऐरलंगा की धार्मिक प्रवृति और अधिक बढ़ गयी, जिसके फलस्वरूप उसके शासन में शिथिलता आ गयी और उसे अपने पुत्रों के लिए अपने राज्य को दो भागों में बाटना पड़ा, जो जावा के लिए हानिकारक सिद्ध हुआ। समाप्त

नोट → 1019 में ऐरलंगा का अभिषेक,
1025 में विजय पर चोल का आक्रमण,
1029 ई० में श्रीजयप्रमाद को वरतन में स्थापना,
1030 ई० में वेंकर के राज्य कुमार का नष्ट करना।
1031 ई० में अधमापद के ऊपर विजय,
1032 ई० में दक्षिण के एक राक्षसी शक्ति को पराजित किया।
सम्राज्ञी राक्षसी थी।